राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन

Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia

24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ0 लोहिया के दर्शन ने समाजवाद को नई दिशा दी– राज्यपाल

मुविवि में ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री रामनाईक जी, विशिष्ट अतिथि संविधान विशेषज्ञ एवं लोकसभा के पूर्व महासचिव पद्मभूषण डॉ0 सुभाष सी. कश्यप जी रहे। इस अवसर पर कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे, आई0सी0पी0आर0 के अध्यक्ष प्रो0 एस. आर. भट्ट जी एवं संगोष्ठी संयोजक, प्रो0 गोपीनाथ जी मंच पर विराजमान थे।

आई0सी0पी0आर0 के अध्यक्ष प्रो0 एस.आर. भट्ट जी ने संगोष्ठी के बारे में दो शव्द कहा, प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत कीं सेमिनार संयोजक डॉ0 जी0के0 द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया संचालन डॉ0 रामजी मिश्र एवं सुश्री मारिषा ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ0 राजेश कुमार पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 राजेन्द्र प्रसाद, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 के0बी0 पाण्डेय, प्रो0 गिरिराज किशोर, प्रो0 आनन्द कुमार, प्रो0 स्मिथ, डॉ0 सुधीर सिंह, प्रो0 महेश विक्रम सिंह, प्रो0 कृष्ण गोपाल, प्रो0 सुब्रत मुखर्जी, डॉ0 प्रभाकर आदि उपस्थित रहे।

माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री राम नाईक जी को तिलक लगाकर स्वागत करते हुए श्री परमानन्द उपाध्याय साथ में कुलपति, प्रो0 एम0पी0 दुबे, एवं पद्मभूषण डॉ0 सुभाष सी. कश्यप जी हाथ मिलाते हुए माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री राम नाईक जी ।

संचालन करते हुए डॉ0 रामजी मिश्र, सुश्री मारिषा
एवं
बन्देमातरम् व कुलगीत के समय खड़े मा0 अतिथिगण।

दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री राम नाईक जी एवं विशिष्ट अतिथि पद्मभूषण डॉ0 सुभाष सी. कश्यप जी साथ कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी तथा प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई जी।

माननीय अतिथियों को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी एवं सेमिनार संयोजक डॉ0 जी0के0 द्विवेदी।

कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए सेमिनार संयोजक डॉ0 जी0के0 द्विवेदी।

संगोष्ठी की रूपरेखा

प्रस्तुत करते हुए

प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई जी।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो0 एस0आर0 भटट ने कहा कि वर्तमान में लोहिया के नवसमाजवाद को नए सिरे से समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारत के विकास के लिए और मौखिक स्तर पर पहचान के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने भारतीय विचारकों जैसे पं0 दीन दयाल उपाध्याय और डॉ0 राम मनोहर लोहिया के दर्शन को वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में देखें और नए समाधान खोजें।

कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने कहा कि भारतीय दर्शन अनेक विद्वानों के विचारों से परिपूर्ण हैं। राममनोहर लोहिया का समाजवाद, समानता और वैचारिक क्रान्ति का दर्शन रहा है। लोहिया जी का दर्शन महात्मा गांधी से प्रभावित था। वह समाज और व्यक्ति में सुधार चाहते थे। उन्होंने कहा कि लोहिया जी का सप्त क्रांति का सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक है। वह सिर्फ स्थानीय स्तर पर नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर समाजवाद की परिकल्पना को देखते हैं।

माननीय अतिथियों को अंगवस्त्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे।

विशिष्ट अतिथि संविधान विशेषज्ञ एवं लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ0 सुभाष कश्यप ने लोहिया जी के साथ के संस्मरणों को याद करते हुए उनके जीवन–दर्शन के अनेक पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने कहा कि लोहिया जी जितना अपने छात्र जीवन में सजग और वैचारिक रूप से समृद्ध थे उतने ही लोकसभा में कुशल वक्ता के रूप में उन्होंने प्रसिद्धि पायी। लोहिया जी में ये खूबी थी कि वे किसी भी गम्भीर वातावरण को अपने सरल एवं सहज व्यवहार से खुशनुमा बना देते थे। लोहिया जी ने रामचरित मानस के प्रशासनिक पक्षों एवं राजनैतिक समझ को माना। वे रामचरितमानस को एक राजनीतिशास्त्र के रूप में देखते थे। लोहिया जी आम जनमानस के बीच में रहकर आमजन की भलाई के लिए सदैव प्रयासरत रहते थे। डॉ0 कश्यप ने कहा कि सहृदय एवं पारदर्शी व्यक्तित्व के स्वामी लोहिया जी अपनी बातों को स्पष्टता एवं तर्को के साथ रखते थे।

मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री रामनाईक ने कहा कि राम मनोहर लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मन्थन ही नहीं वर्तमान सामायिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहिया जी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया उसने समाजवाद को नई दिशा दी। श्री नाईक ने कहा कि जिस काल खण्ड में सिर्फ साम्यवादी एवं पूंजीवादी विचारधारा का वर्चस्व था उस समय अपने विचारों एवं तर्कों के आधार पर लोहिया जी ने समाज को नई दिशा दी। उन्होंने कहा कि लोहिया जी को मातृभाषा से प्यार था। उनके जीवन पर तुलसीदास के मानववाद और गांधी के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। भारतीय संस्कृति के पोषक लोहिया जी का जीवन कथनी और करनी में समान था। जैसा उनका विचार था वैसा ही आचार और व्यवहार था। राज्यपाल श्री नाईक ने कहा कि यहाँ तक कि लोहिया जी अपने विचारों के विरोधी और भिन्न प्रकार के विचार रखने वालों के बीच सामन्जस्य रखना जानते थे। उन्होंने विपक्ष में एकता के सिद्धान्त को समाज के सामने लाते हुए वैचारिक रूप से समृद्ध भारत की नींव रखी। श्री नाईक ने कहा कि भारत में सभी भाषाओं का सम्मान करना, स्थानीय भाषाओं को उचित स्थान दिलाने के साथ ही सत्ता के स्तर पर विकेन्द्रीकरण की नीति के पक्षधर रहे।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए
कुलसचिव
डॉ0 राजेश कुमार पाण्डेय

पत्रकारों से वार्ता करते हुए
माननीय श्री राज्यपाल एवं
कुलाधिपति
श्री राम नाईक जी

माननीय श्री राज्यपाल एवं कुलाधिपति
श्री राम नाईक जी को हेलीपैड पर विदा
करते हुए कुलपति जी।

राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन
Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia
24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

टेक्निकल सत्र

दिनांक 24–25 मार्च, 2017

संगोष्ठी में बोलते हुए प्रो0 आनन्द कुमार, समाज शास्त्र विभाग, जे.एन.यू. नई दिल्ली एवं उपस्थित प्रतिभागीगण।

संगोष्ठी में प्रतिभागियों के जिज्ञासु प्रश्नों का जबाब देते प्रो0 आनन्द कुमार, समाज शास्त्र विभाग, जे.एन.यू. नई दिल्ली

संगोष्ठी में बोलते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो0 एस0आर0 भट्ट

सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।

संगोष्ठी में बोलते हुए विशिष्ट वक्ता एवं सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।

UPRTOU

NEWS FROM THE WEEK:

24 March 2017

भारतीय अस्मिता की खोज में युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें शिक्षक –डॉ0 कश्यप

मुविवि में राजर्षि टण्डन स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में शुक्रवार को लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन स्मृति व्याख्यानमाला के त्रयोदश पुष्प का आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता लोकसभा के पूर्व महासचिव पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप जी एवं अध्यक्षता कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे जी ने की।

प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव ने किया। संचालन डॉ0 रामजी मिश्र तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ0 आर0के0 पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर श्रोताओं ने डॉ0 सुभाष कश्यप से भारतीय अस्मिता से सम्बन्धित कई जिज्ञासु प्रश्न कियें जिसका उन्होंने समाधान प्रस्तुत किया।

बैठे हुए माननीय अतिथि एवं संचालन करते हुए डॉ0 रामजी मिश्र,

दीप प्रज्ज्वलित कर संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए माननीय अतिथि एवं सभागार में उपस्थित स्रोतागण।

पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप जी को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी ।

कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे जी को पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करते मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव

व्याख्यान माला के बारे में बताते हुए
एवं
अतिथियों का स्वागत
करते हुए
मानविकी विद्याशाखा
के
निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव
तथा सभागार में बैठे हुए स्रोतागण।

पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप जी को अंगवस्त्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए कुलपति प्रो0 एम.पी. दुबे।

मा0 कुलपति जी को अंगवस्त्र एवं स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए निदेशक डॉ0 आर0पी0एस0 यादव एवं डॉ0 अतुल मिश्रा।

व्याख्यानमाला के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता लोकसभा के पूर्व महासचिव पदमभूषण डॉ0 सुभाष कश्यप ने ''भारतीय अस्मिता की खोज'' विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति और मूल्य भौगोलिक सीमाओं के अधीन नहीं अपितु विदेशों में भी पुष्पित एवं पल्लवित हो रहे हैं। भारतीय अस्मिता की खोज करनी है तो सांस्कृतिक परम्पराओं, मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की समझ को विकसित करना होगा। वैश्विक स्तर पर अपने संस्मरणों को साझा करते हुए डॉ0 कश्यप ने बताया कि फिजी, इण्डोनेशिया, कम्बोज, थाईलैण्ड, मारीशस आदि देशों में भारतीय संस्कृति एवं विरासत के अंश दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में अनेक चुनौतियां हैं। व्यक्ति सत्ता, सम्पदा और सफलता के लालच में मूल्यों का अवमूल्यन कर रहा है। वर्तमान दौर संक्रमण काल और कठिन परिस्थितियों का है । वसुधैव कुटुम्बकम की धारणा वैश्विक बाजार में परिवर्तित होती दिखाई दे रही है। ऐसे में आवश्यकता है कि विभिन्नता से एकता की ओर अनन्त यात्रा और भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों की रक्षा की जाये। उन्होंने कहा कि वर्तमान पीढ़ी खासकर शिक्षकों की अहम जिम्मेदारी है कि वह भारतीय अस्मिता की खोज में युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने कहा कि भारतीय संस्कृति में मूल्यों का बहुत महत्व है प्राचीन शिक्षा व्यवस्था मूल्य आधारित और अभ्यासपूर्ण थी। कालान्तर में जो चुनौतियां आयी हैं उन्हें दूर करना और भारतीय संस्कृति की रक्षा करना हमारा दायित्व है। इसके लिये आवश्यक है वर्तमान शिक्षा प्रणालियों की चुनौतियों और कमियों को दूर करने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की व्यवस्था की जाये।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कुलसचिव डॉ0 राजेश कुमार पाण्डेय

वर्ष 4 अंक 202
पृष्ठ 20+4=24
इलाहाबाद, शनिवार
25 मार्च 2017
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 5.00

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

आगे बढ़ा माल्या के प्रत्यर्पण का मामला 17

वीजा आवेदकों से अमेरिका मांग सकता है रिकॉर्ड 17

www.jagran.com
दिल्ली • उत्तर प्रदेश • मध्य प्रदेश • हरियाणा • उत्तराखण्ड • बिहार • झारखंड • पंजाब • जम्मू-कश्मीर • हिमाचल प्रदेश • पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

मेनिफेस्टो पर हो काम : राज्यपाल

लोहिया के दर्शन में तुलसी व गांधी का प्रभाव : नाईक

न्यायमूर्ति गिरिधर मालवीय से मिले गवर्नर

समाजवादी पार्टी की सरकार के पतन पर हो चर्चा

अमर उजाला ALLAHABAD कैंपस

लोहिया के विचार ही नहीं, आचार भी अपनाएं

उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले राज्यपाल रामनाईक

इलाहाबाद। प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक का मानना है कि विचार और आचार एक जैसे होने चाहिए। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करने पहुंचे राज्यपाल राम नाईक इशारों में ही यूपी में हुए सत्ता परिवर्तन के बारे में बहुत कुछ बोल गए। कहा कि जिन्होंने लोहिया के विचारों को अपनाया, उन्हें आचार भी वैसा ही रखना चाहिए। वह सलाह दे गए कि इस बिंदु को यूपी में हुए सत्ता परिवर्तन से जोड़कर संगोष्ठी में मुद्दे पर मंथन किया जाना चाहिए, हो सकता है कि भविष्य में कुछ सुधार हो।

उन्होंने कहा कि राम मनोहर लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मथंन नहीं, वर्तमान सामायिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहियाजी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया, उसने समाजवाद को नई दिशा दी। उन्हें मातृभाषा से प्यार था। जैसा उनका विचार था, वैसा ही आचार और व्यवहार था। यहां तक कि वह अपने विचारों के विरोधी और भिन्न प्रकार के विचार रखने वालों के बीच सामंजस्य रखना जानते थे। उन्होंने विपक्ष में एकता के सिद्धांत को समाज के सामने लाते हुए वैचारिक रूप से समृद्ध भारत की नींव रखी। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली और उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि के संयुक्त तत्वधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में खास यह रहा कि बीच-बीच में विषय से इतर पंडित दीन दयाल उपाध्याय पर भी चर्चा होती रही। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि भारतीय दर्शन अनेक विद्वानों के विचारों से परिपूर्ण हैं।

संविधान विशेषज्ञ डॉ. कश्यप ने लोहिया के कुछ वर्तमान अनुयायियों पर कसा तंज

इससे पहले लोकसभा के पूर्व महासचिव एवं संविधान विशेषज्ञ डॉ. सुभाष कश्यप ने अपने उद्बोधन में डॉ. राम मनोहर लोहिया के कुछ वर्तमान अनुयायियों पर तंज कसते हुए कहा है कि लोहिया जी कुछ अनुयायियों को पीछे छोड़ गए हैं। अगर वर्तमान में ऐसे अनुयायियों के चलन को देखते हुए डॉ. लोहिया के बारे में आंकलन करेंगे तो यह लोहिया जी के साथ अन्याय होगा। उन्होंने कहा कि लोहिया जितना अपने छात्र जीवन में सजग व वैचारिक रूप से समृद्ध थे, उतनी ही प्रसिद्धि उन्होंने लोकसभा में कुशल वक्ता के रूप में पाई। आईसीपीआर के प्रो. गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। संयोजक डॉ. जीके द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. रामजी मिश्र एवं मारिया किया धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजेश पाण्डेय ने किया।

राज्यपाल ने किया विवि के क्षेत्रीय केंद्र का उद्घाटन

इलाहाबाद। राज्यपाल राम नाईक ने शुक्रवार को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में स्थित नवनिर्मित क्षेत्रीय केंद्र इलाहबाद के भवन का उद्घाटन भी किया। गौरतलब है कि इस केंद्र का शिलान्यास भी उन्होंने ही किया था। क्षेत्रीय केंद्र में शिक्षार्थियों की हर तरह की समस्याओं का समाधान किया जाएगा। साथ ही उन्हें नई जानकारियों से अवगत कराया जाएगा। इस मौके पर राज्यपाल ने वहां पौधरोपण भी किया। उद्घाटन समारोह में कुलपति प्रो. एमपी दुबे, कुलसचिव डॉ. राजेश पांडेय, क्षेत्रीय केंद्र की निदेशक डॉ. पूर्णिमा शर्मा आदि मौजूद रहे।

सरकार ने जो आश्वासन दिए, उन पर काम करना चाहिएः नाईक

इलाहाबाद। प्रदेश में तमाम चयन आयोगों में भर्तियों एवं इंटरव्यू पर रोक लगाए जाने और नई सरकार के अन्य कामकाज के बारे में राज्यपाल राम नाईक ने कहा कि जब भी नई सरकार आती है तो पिछले तीन-चार माह में हुए कार्यों का निरीक्षण करती है। सरकार को अपना काम करने देना चाहिए। सरकार ने जो आश्वासन दिए थे, अब उन पर काम भी करके दिखाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार ने काम शुरू भी कर दिया है और समय बीतने के साथ जनता इसका मूल्यांकन करेगी।

आज का दिन 1807 में इंग्लैंड के ऑयस्टरमाउथ रेलवे ने विश्व की पहली यात्री रेल सेव

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का राज्यपाल राम नाईक ने किया उद्घाटन

लोहिया के विचार की तरह ही थे उनके आचार

बोले गवर्नर

इलाहाबाद | प्रमुख संवाददाता

सूबे के राज्यपाल राम नाईक ने शुक्रवार को राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि कई बार व्यक्ति के विचार तो अच्छे दिखते हैं लेकिन उसका आचार विचारों के अनुकूल नहीं होता। डॉ. लोहिया का जैसा विचार था, वैसा ही उनका आचार भी था। वह जैसा बोलते थे, वैसा ही करते थे।

सत्ता की हार के विश्लेषण का सुझाव: राज्यपाल ने यूपी चुनाव नतीजों का हवाला देते हुए संगोष्ठी में देशभर से जुटे दार्शनिकों को सूबे में हुए सत्ता परिवर्तन का विश्लेषण करने का सुझाव दिया। कहा कि यह संगोष्ठी डॉ. लोहिया पर है और हाल ही में सूबे में सत्ता की सरकार परिवर्तित हुई है इसलिए इसमें चर्चा की दृष्टि से यह विषय भी अहम हो सकता है।

इसका विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर) के सहयोग से आयोजित संगोष्ठी में राज्यपाल ने कहा कि डॉ. लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मंथन ही नहीं, वर्तमान सामाजिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहिया जी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया, उसने समाजवाद को नई दिशा दी। डॉ. लोहिया को मातृभाषा से प्यार था। उनके जीवन पर तुलसीदास के मानववाद और गांधी के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था।

शुक्रवार को फाफामऊ स्थित राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में यमुना परिसर स्थित क्षेत्रीय केंद्र के नए भवन का उद्घाटन राज्यपाल राम नाईक ने किया। इस मौके पर कुलपति प्रो. एमपी दुबे और विश्वविद्यालय के पदाधिकारी मौजूद रहे।

क्षेत्रीय केंद्र के भवन का किया उद्घाटन

संगोष्ठी का उद्घाटन करने से पूर्व राज्यपाल ने राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन भी किया। यह भवन फाफामऊ में बनाया गया है। अभी तक क्षेत्रीय केंद्र किराए के भवन में संचालित था। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने बताया कि किराए के भवन में चल रहे बाकी क्षेत्रीय केंद्रों का अपना भवन बनाने के लिए भी प्रयास चल रहा है।

सरकार को पूरा करना चाहिए वादा: गवर्नर

लोक सेवा आयोग की भर्तियों की सीबीआई से जांच कराने की प्रतियोगियों की मांग संबंधी सवाल पर राज्यपाल ने कहा कि जो भी नई सरकार बनती है, वह पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा तीन या छह माह में लिए गए फैसलों का विश्लेषण करती है। कहा कि सूबे की भाजपा सरकार ने अपने घोषणा पत्र के जरिए जनता से जो वादा किया है, उसके मुताबिक काम करते हुए वादे को पूरा करना चाहिए।

श्रीखंड, कढ़ी और रसमलाई का किया सेवन: मुक्त विश्वविद्यालय के कार्यक्रम के बाद राज्यपाल जार्जटाउन स्थित न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय के आवास पर गए। वहां उन्होंने भोजन किया। राज्यपाल के लिए कई स्वादिष्ट व्यंजन बनाए गए थे। उन्होंने श्रीखंड, कढ़ी और रसमलाई सहित अन्य व्यंजनों का सेवन किया। फिर वापस लखनऊ चले गए। उनके साथ डॉ. सुभाष कश्यप और मुक्त विवि के कुलपति प्रो. एमपी दुबे भी थे।

फालोवरों से न करें लोहिया का आकलन

संविधान विशेषज्ञ पद्मभूषण डॉ. सुभाष कश्यप ने डॉ. लोहिया के साथ बिताए दिनों को याद करते हुए कई रोचक संस्मरण सुनाए। उन्होंने कटाक्ष करते हुए प्रतिभागियों को सुझाव दिया कि वे डॉ. लोहिया के विचारों का आकलन उनके फालोवरों के चाल-चलन से कतई न करें।

उन्होंने कहा कि डॉ. लोहिया ने रामचरित मानस के प्रशासनिक पक्षों एवं राजनैतिक समझ को माना। वह आम जनमानस के बीच में रहकर उनकी भलाई के लिए सदैव प्रयासरत रहते थे। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि डॉ. लोहिया का समाजवाद, समानता और वैचारिक क्रान्ति का दर्शन रहा है।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि वर्तमान में डॉ. लोहिया के नवसमाजवाद को नए सिरे से समझने की जरूरत है। प्रो. गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। संयोजक डॉ. जीके द्विवेदी ने स्वागत, संचालन डॉ. रामजी मिश्र एवं सुश्री मारिषा और धन्यवाद ज्ञापन रजिस्ट्रार डॉ. राजेश पांडेय ने किया। कार्यक्रम में इलाहाबाद राज्य विवि के वीसी प्रो. राजेन्द्र प्रसाद, एनजीबीयू के वीसी प्रो. केबी पांडेय, प्रो. गिरिराज किशोर, प्रो. आनन्द कुमार, प्रो. मिश्र, डॉ. सुधीर सिंह, प्रो. महेश विक्रम सिंह, प्रो. कृष्ण गोपाल, प्रो. सुब्रत मुखर्जी, डॉ. प्रभाकर आदि उपस्थित थे।

युवाओं का मार्गदर्शन करें शिक्षक

इलाहाबाद | प्रमुख संवाददाता

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में शुक्रवार को राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन स्मृति व्याख्यानमाला के तहत लोकसभा के पूर्व महासचिव पद्मभूषण डॉ. सुभाष कश्यप का व्याख्यान हुआ।

'भारतीय अस्मिता की खोज' विषयक व्याख्यान में उन्होंने कहा कि भारतीय अस्मिता की खोज करनी है तो सांस्कृतिक परंपराओं, मूल्यों एवं आध्यात्मिकता की समझ विकसित करनी होगी। वर्तमान में सत्ता, संपदा और सफलता के लालच में मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। ऐसे में शिक्षकों की अहम जिम्मेदारी है कि वे भारतीय अस्मिता की खोज में युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें। अध्यक्षता कर रहे मुक्त विवि के कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणालियों की चुनौतियों और कमियों को दूर करने के लिए मूल्य आधारित शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। अतिथियों का स्वागत मानविकी विद्याशाखा के निदेशक डॉ. आरपीएस यादव ने किया।

राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में शुक्रवार को कुलपति प्रो. एमपी दुबे और राज्यपाल राम नाईक ने संविधानविद् डॉ. सुभाष कश्यप को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

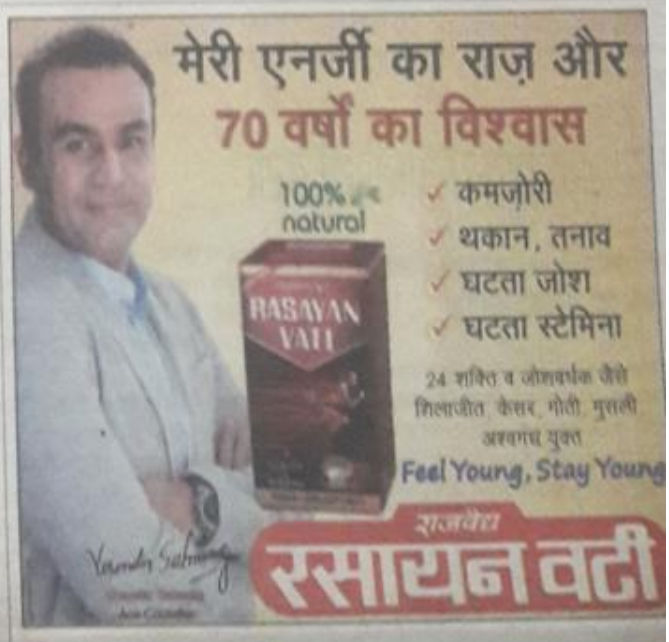

राष्ट्रीय सहारा

अपना शहर इलाहाबाद

3

दार्शनिक राममनोहर लोहिया जी
विषयों पर गहन अध्ययन प्रस्तु
को एक नई दिशा दी।

लखनऊ। ● शनिवार ● 25 मार्च 2017

डॉ. लोहिया के दर्शन ने समाजवाद को दी नई दिशा

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

इलाहाबाद।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषयक संगोष्ठी का शुक्रवार को उद्घाटन करते

राज्यपाल राम नाईक ने किया मुक्त विवि के क्षेत्रीय केन्द्र का उद्घाटन

हुये मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने कहा कि राम मनोहर लोहिया का दर्शन सिर्फ विचारों का मन्थन ही नहीं, वर्तमान सामायिक समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। दार्शनिक लोहिया जी ने तत्कालीन आर्थिक विषयों पर जो गहन अध्ययन प्रस्तुत किया उसने समाजवाद को नई दिशा दी।

श्री नाईक ने कहा कि जिस काल खण्ड में सिर्फ साम्यवादी एवं पूंजीवादी विचारधारा का वर्चस्व था, उस समय अपने विचारों एवं तर्कों के आधार पर लोहिया जी ने समाज को नई दिशा दी। कहा कि लोहिया जी को मातृभाषा से प्यार था। उनके जीवन पर तुलसीदास के मानववाद और गांधी के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव था। भारतीय संस्कृति के पोषक लोहिया जी का जीवन कथनी और करनी के अंतर में समान था। जैसा उनका विचार था वैसा ही आचार और व्यवहार था। राज्यपाल श्री नाईक ने कहा कि यहां तक कि लोहिया जी अपने विचारों के विरोधी और भिन्न प्रकार के विचार रखने वालों के बीच सामंजस्य रखना जानते थे। संविधान विशेषज्ञ एवं लोकसभा के पूर्व महासचिव डॉ. सुभाष कश्यप ने विशिष्ट अतिथि के रूप में लोहिया जी के साथ के संस्करणों को याद करते हुए उनके जीवन-दर्शन के अनेक पहलुओं को उजागर किया। उन्होंने कहा कि लोहिया जी जितना अपने छात्र जीवन में सजग और वैचारिक रूप से समृद्ध थे उतने ही लोकसभा में कुशल वक्ता के रूप में उन्होंने प्रसिद्धि पायी। लोहिया जी में ये खूबी थी कि वे किसी भी गम्भीर वातावरण को अपने सरल एवं सहज व्यवहार से खुशनुमा बना देते थे। लोहिया जी ने रामचरित मानस के प्रशासनिक पक्षों एवं राजनैतिक समझ को माना। वे रामचरितमानस को एक राजनीतिशास्त्र के रूप में देखते थे। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि भारतीय दर्शन अनेक विद्वानों के विचारों से परिपूर्ण हैं।

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के चेयरमैन प्रो. एसआर भट्ट ने कहा कि वर्तमान में लोहिया के नवसमाजवाद को नए सिरे से समझने की जरूरत है। आईसीपीआर के प्रो. गोपीनाथ पिल्लई ने संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तुत की। सेमिनार संयोजक डॉ. जीके द्विवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन डॉ. रामजी मिश्र एवं सुश्री मारिशा ने किया।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विवि के यमुना परिसर स्थित नवनिर्मित क्षेत्रीय केन्द्र इलाहाबाद के भवन का उद्घाटन शुक्रवार को प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने किया। इस केन्द्र का शिलान्यास भी राज्यपाल श्री नाईक ने किया था। इस भवन में अब इलाहाबाद केन्द्र से अधिकृत अध्ययन केन्द्रों के शिक्षार्थियों की हर तरह की समस्याओं का समाधान किया जाएगा और उन्हें नई जानकारियों से भी अवगत कराया जाएगा। राज्यपाल श्री नाईक ने क्षेत्रीय केन्द्र का भ्रमण किया तथा वहां उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। केन्द्र का निर्माण सी एण्ड डीएस द्वारा किया गया। विश्वविद्यालय का यह केन्द्र वाई-फाई सुविधा से सम्पन्न होगा।

फाफामऊ में मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय कार्यालय भवन का उद्घाटन करते राज्यपाल राम नाईक। फोटो : एसएनबी

तीन महीने बाद करना चाहिए कार्यों का मूल्यांकन

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल राम नाईक ने लोक सेवा आयोग उत्तर प्रदेश की भर्तियों पर धांधली को लेकर बड़ा बयान दिया है । गवर्नर ने कहा है की नई सरकार आई है जो धांधलियों की जांच करेगी ताकि आयोग को भ्रष्टाचार मुक्त किया जा सके। उन्होंने यह भी कहा है की सूबे की नई सरकार का काम दिखने लगा है। सरकार अपने संकल्प पत्र के मुताबिक कार्य कर रही है, कानून व्यवस्था उसकी प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार साल के अंतिम के तीन महीने के बाद कार्यों का मूल्यांकन करना चाहिए। नई सरकार को वक्त देना होगा।

---

the pioneer

MARCH 25, 2017

Lohia respected all Indian languages, says Ram Naik

Uttar Pradesh Governor Ram Naik being presented a memento by the UPRTOU Vice-Chancellor, Prof MP Dube, during a seminar on Dr Ram Manohar Lohia there on Friday

PTI

Governor Ram Naik attending a national seminar at UPRTOU in Allahabad on Friday

Pioneer

PIONEER NEWS SERVICE ■ ALLAHABAD

Inaugurating the three-day-long national symposium on 'Dr Ram Manohar Lohia ka Darshan' organised by the Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University (UPRTOU) here on Friday, the UP Governor, Ram Naik, said that the aforesaid topic was not only meant for debate but it would also help in solving the contemporary problems being faced by all sections of the society. The profound study which was presented by the philosopher, Lohia, on the erstwhile financial affairs provided a new direction to socialism. Naik said that Lohia respected all the languages in India and also got the local language its due place in society. Besides, he had always supported the fiduciary policy of decentralisation. Speaking on the occasion, its Vice-Chancellor, Prof MP Dube, said that the Indian philosophy was replete with the ideas of many scholars. The philosophy of the Lohia was inspired by the Father of Nation, Mahatma Gandhi. He wanted the changes, both in society as well as human beings. Prof Gopinath Pillai of the ICPR presented the outline of the seminar while its convener, Dr GK Dwivedi, welcomed the guests and Dr Ramji Mishra conducted it. The vote of thanks was proposed by the Registrar, Dr Rajesh Pandey.

The programme was also attended by the Vice-Chancellor of the Allahabad State University, Prof Rajendra Pradad, the V-C of Nehru Gram Bharti University, Prof KP Pandey, Prof Giriraj Kishore, Prof Anand Kumar, Prof Smith, Dr Sudhir Singh, Prof Mahesh Vikram Singh, Prof Krishna Gopal, Prof Subrat Mukherji, Dr Prabhakar and others. Meanwhile the Uttar Pradesh Governor, Ram Naik, inaugurated the newly-constructed regional centre situated at the Yamuna premises of the UPRTOU here on Friday. It may be pointed out here that the foundation-laying of the aforesaid premises had also been carried out by the Governor, Ram Naik. Now all the problems of the students of the authorised study centres will be sorted out in the aforesaid building. Besides the students will be apprised of the latest information there. The UP Governor also took a round of the regional centre and sought information about the facilities being provided to the students there. The construction of the aforesaid regional centre was made by the C&DS. This regional centre of the varsity will be equipped with Wi-Fi facility. The Governor also planted saplings on the occasion. He was accompanied by the UPRTOU's V-C, Prof MP Duby, the Registrar, Dr Rajesh Kumar Pandey, the Director of the Allahabad Regional Centre, Dr Purnima Sharma, and others.

दैनिक जागरण, Allahabad, 25 March 2017

योगी को अभी मौका दिया जाना चाहिए

PIC: DAINIK JAGRAN I NEXT

allahabad@inext.co.in

ALLAHABAD (24 March): राज्यपाल राम नाईक ने कहा है कि योगी ने अभी काम की शुरुआत की है. किसी बात पर टोकना अभी ठीक नहीं है. उन्होंने शुक्रवार को यह टिप्पड़ी एंटी रोमियो दल द्वारा सामान्य युवकों के उत्पीड़न के सवाल पर की. वह यहां यूपीआरटीओयू में आयोजित प्रोग्राम में हिस्सा लेने के लिए पहुंचे थे. यहां सेमीनार में भाग लेने के बाद वह जस्टिस गिरधर मालवीय के आवास पर स्वास्थ्य के बारे में जानकारी लेने पहुंचे. यहां उन्होंने करीब 40 मिनट बिताए. दोनों के बीच अनेक सामाजिक मुद्दों पर लंबी चर्चा हुई. चर्चा के दौरान कई पुरानी यादें ताजा हुईं. सबने साथ में भोजन किया. वापसी में जस्टिस मालवीय ने राज्यपाल रामनाईक को कुछ पुस्तकें भेंट की. राज्यपाल का स्वागत जस्टिस मालवीय के साथ उनकी पत्नी कांता मालवीय, बेटी रुचि भार्गव व दामाद दीपक भार्गव ने किया. उनके साथ संविधानविद् सुभाष कश्यप भी पहुंचे थे.

अपने आवास पर गवर्नर का वेलकम करते जस्टिस गिरधर मालवीय.

---

www.dailynewsactivist.com

इलाहाबाद

डेली न्यूज़ एक्टिविस्ट

इलाहाबाद, शनिवार, 25 मार्च 2017

5

लोहिया के दर्शन ने समाजवाद को दी नई दिशा : राज्यपाल

डेली न्यूज नेटवर्क

- रामचरितमानस लोहिया के लिए एक राजनीतिशास्त्र: डॉ. कश्यप
- मुविवि में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राज्यपाल ने किया क्षेत्रीय केन्द्र का उद्घाटन

युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करें शिक्षक: डॉ. कश्यप

डेली न्यूज नेटवर्क

- मुविवि में राजर्षि टण्डन स्मृति व्याख्यानमाला के त्रयोदश पुष्प का आयोजन

मांगें पूरी न होने पर

यमुना परिसर में क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन की एक झलक
दिनांक 24 मार्च, 2017

UPRTOU

NEWS FROM THE WEEK:

26 March 2017

राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन
Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia
24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

टेक्निकल सत्र

दिनांक 26 मार्च, 2017

संगोष्ठी में बोलते हुए संगोष्ठी संयोजक प्रो0 गोपीनाथ पिल्लई एवं उपस्थित प्रतिभागीगण।

संगोष्ठी में बोलते हुए विशिष्ट वक्ता एवं सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।

संगोष्ठी

में

बोलते हुए

विशिष्ट वक्ता

एवं

सभागार में बैठे हुए प्रतिभागीगण।

UPRTOU

NEWS FROM THE WEEK:

26 March 2017

राष्ट्रीय सेमिनार

डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन

Philosophy of Dr. Ram Manohar Lohia

24, 25 एवं 26 मार्च, 2017

आयोजक

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

समापन सत्र

दिनांक 26 मार्च, 2017

राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक मानसिक गुलामी– प्रो. आनन्द कुमार

''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' विशय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी ''डॉ0 राम मनोहर लोहिया का दर्शन'' का समापन रविवार को हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात समाजशास्त्री तथा जे.एन.यू. के प्रो. आनन्द कुमार एवं अध्यक्षता कुलपति एम.पी.दुबे जी ने की।

अतिथियों का स्वागत निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता ने किया । विश्वविद्यालय के बारे में आयोजन सचिव डॉ. जी.के. द्ववेदी ने जानकारी दी। तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने प्रस्तुत की। संगोष्ठी का संचालन सह–आयोजन सचिव डॉ. श्रुति एवं धन्यवाद् ज्ञापन सह–आयोजन सचिव डॉ. अतुल कुमार मिश्रा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से 125 प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

संगोष्ठी का संचालन करती हुई सह–आयोजन सचिव डॉ. श्रुति

अतिथियों का स्वागत करते हुए निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता

अतिथियों को पुष्पगुच्छ प्रदान करती हुई असि. प्रोफेसर डॉ0 रुचि बाजपेई

तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई,

विश्वविद्यालय के बारे में बताते हुए आयोजन सचिव डॉ. जी.के. द्ववेदी

मुख्य अतिथि प्रख्यात समाजशास्त्री तथा जे.एन.यू. के प्रो. आनन्द कुमार ने कहा कि राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक मानसिक गुलामी है। समाज में परिवर्तन लाने के लिए तीन नीतियां आवश्यक हैं। भाषा नीति, दाम नीति एवं दास नीति। प्रो. कुमार ने कहा कि भाषा के विकास के साथ–साथ आर्थिक समानता और सामाजिक समानता आवश्यक है तभी शोषण से मुक्ति मिल सकती है। भाषा एक सांस्कृतिक पूंजी है। भाषा समृद्धि होगी तो संस्कृति भी समृद्ध होगी। उन्होंने भोजपुरी एवं मैथिली भाषा की वकालत करते हुए कहा कि इन्हें भी संविधान की आंठवी अनुसूची में शामिल किया जाना चाहिए।

प्रो. कुमार ने कहा कि सरकारी काम–काज लोक भाषा में होने चाहिए न कि आंग्ल भाषा में। प्रो. कुमार ने कहा कि डॉ. लोहिया ने चित्रकूट में रामायण मेले की शुरुआत की, जो कि एक सांस्कृतिक मेला है जिसमें समाज के सभी जाति, पंथ एवं वर्ग के लोग आज भी सम्मिलित होते हैं। उन्होनें कहा कि लोहिया जी का व्यक्तित्व करिश्माई था। 1942 में जब कांग्रेसी जेल चले गये तो डॉ. लोहिया ने कई युवाओं के साथ स्वतंत्रता आंदोलन कमान संभाली।

धन्यवाद् ज्ञापन करते हुए सह–आयोजन सचिव डॉ. अतुल कुमार मिश्रा

हिन्दुस्तान 04
इलाहाबाद • सोमवार • 27 मार्च 2017

राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक है मानसिक दासता

इलाहाबाद | प्रमुख संवाददाता

संगोष्ठी

- मुक्त विवि में डॉ. लोहिया का दर्शन विषय पर आयोजित संगोष्ठी का हुआ समापन
- तीन दिवसीय संगोष्ठी के दौरान पढ़े गए 125 से ज्यादा शोध पत्र

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में 'डॉ. राम मनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर आयोजित संगोष्ठी का रविवार को समापन हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि समाजशास्त्री जेएनयू के प्रो. आनन्द कुमार रहे। उन्होंने कहा कि राजनीतिक गुलामी से ज्यादा घातक मानसिक गुलामी है।

कहा कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए तीन नीतियां आवश्यक हैं। भाषा नीति, दाम नीति एवं दास नीति। प्रो. कुमार ने कहा कि भाषा के विकास के साथ-साथ आर्थिक समानता और सामाजिक समानता आवश्यक है। तभी शोषण से मुक्ति मिल सकती है। भाषा एक सांस्कृतिक पूंजी है। भाषा समृद्धि होगी तो संस्कृति भी समृद्ध होगी। उन्होंने भोजपुरी एवं मैथिली भाषा की वकालत करते हुए कहा कि इन्हें भी संविधान की आंठवी अनुसूची में शामिल किया जाना चाहिए।

डॉ. आलोक कुमार सिंह ने कहा कि डॉ. लोहिया सरकार बनाने वाले नहीं बल्कि समाज बनाने वाले योद्धा थे लेकिन आज के समय में लोग सरकार बनाने की तिकड़म करते हैं समाज बनाने का प्रयास नहीं।

अध्यक्षता कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने की। अतिथियों का स्वागत निदेशक विज्ञान विद्याशाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता ने किया। मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में विस्तृत जानकारी आयोजन सचिव डॉ. जीके द्विवेदी ने दी।

तीन दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की रिपोर्ट संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई ने प्रस्तुत की। संगोष्ठी का संचालन सह-आयोजन सचिव डॉ. श्रुति एवं धन्यवाद ज्ञापन सह-आयोजन सचिव डॉ. अतुल कुमार मिश्रा ने किया। संगोष्ठी में पर देश के विभिन्न भागों से आए 125 प्रतिभागियों ने अपने-अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत किए।

6
दैनिक जागरण
इलाहाबाद, 27 मार्च 2017

'राजनीतिक से मानसिक गुलामी घातक'

जासं, इलाहाबाद : उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विवि में 'डॉ. राममनोहर लोहिया का दर्शन' विषय पर चल रही तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का रविवार को समापन हो गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि जेएनयू के प्रो. आनंद कुमार ने कहा कि मानसिक गुलामी राजनीतिक गुलामी से कहीं ज्यादा घातक है। उन्होंने कहा कि समाज में परिवर्तन के लिए तीन नीतियां आवश्यक हैं।

उन्होंने डॉ. लोहिया का संदर्भ लेते हुए कहा कि भाष के विकास के साथ साथ आर्थिक समानता व सामाजिक समानता आवश्यक है। भाषा समृद्ध होगी तभी संस्कृति भी समृद्ध होगी। उन्होंने भोजपुरी और मैथिली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की जरूरत पर जोर दिया। इस दौरान उन्होंने अंग्रेजी की जगह सरकारी कामकाज में लोकभाषा के इस्तेमाल की भी वकालत की। डॉ. आलोक सिंह ने कहा कि डॉ. लोहिया सरकार बनाने वाले नहीं बल्कि समाज बनाने वाले योद्धा थे। अध्यक्षता कर रहे प्रो. एमपी दुबे ने अतिथियों का आभार जताया। संयोजक डॉ. गोपीनाथ पिल्लई ने सैमीनार की रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस मौके पर निदेशक विज्ञान विद्या शाखा डॉ. आशुतोष गुप्ता, डॉ. जीके द्विवेदी, अतुल कुमार मिश्र आदि मौजूद रहे। कुल 125 प्रतिभागियों ने इन तीन दिनों में अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।